ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

''भीष्म साहनी के उपन्यासों में नारी चेतना का अध्ययन''

शालिनी मिश्रा (शोधार्थी) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़
डॉ. प्रवीण शर्मा (शोध निर्देशक) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति में नारी को सदा ही आदर की दृष्टि से देखा जाता रहा है। 'मनुस्मृति' में कहा गया है–**'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता'** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है–

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखों में पानी।'

गोस्वामी तुलसी दास ने भी कहा है–

'कत विधि सृजी नारी जग मांही।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।।'

अर्थात् नारी सदा से ही पराधीन रही है तथा पराधीन को सपने में भी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। नारी कभी भी स्वतंत्र नहीं रही है, न बाल्यकाल में, न यौवनकाल में और न वृद्धावस्था में। प्रश्न यह है कि क्या नारी को स्वतंत्रता मिली है? या फिर अभी भी नारी का शोषण हो रहा है? मेरी दृष्टि से पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में नारी सदैव शोषण का शिकार रही है। पुरुष की तुलना में नारी को समाज में कनिष्ठ दर्जा ही प्रदान किया गया है। समय के साथ व बदलती परिस्थितियों में नारी की स्थिति में परिवर्तन भले ही आया है, किन्तु आज भी नारी पराधीन है। नारी जितनी साहित्य में स्वतंत्र हुई है, उतनी सामाजिक दौर में नहीं हुई। आज भी चाहे पिता हो, पति हो या बेटा हो, नारी को उसके अधीन रहना पड़ता है। इसी सवाल को लेकर मैंने अपना शोध–प्रबंध नारी–चेतना को लेकर पसंद किया है।

नारी प्रकृति रूपा है, प्रकृति परमपुरुष की इच्छा का प्रतिफलन है। प्रसिद्ध है कि जगन्नियता को जब एकाकी रमने में कुछ ऊब सी हुई तो वे स्वकीय इच्छा–शक्ति से एक से दो हो गए। उस तरह से प्रकृति की सुरुचिपूर्ण रमण सृष्टि है। वह पुरुष की पूरक है। उसे आदिकाल से ही समस्त सृष्टि की संचालिका शक्ति माना जाता है। नारी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। नारी के संयोग से ही संसार आगे बढ़ता है।

नारी हमेशा से ही पुरुष की प्रेरणा रही है। नारी का शारीरिक सौन्दर्य अगर पुरुष को लुभाता है, इसकी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति करता है तो नारी का आत्मिक सौन्दर्य पुरुष के कार्यों की प्रेरणा भी बनता है। नारी पुरुष को निराशा के क्षणों में आशा देती है, दुःख में दिलासा देती है और उसके कर्म में उत्साह भरती है।

नारी–चेतना का अर्थ एवं स्वरूप :

'नारी' शब्द नर से उत्पन्न माना जाता है तथा चेतना शब्द का अर्थ हैप्राणी–मात्रा में रहने वाला वह तत्त्व है जो उसे निर्जीव जड़ पदार्थों से भिन्नताप्रदान करता है। नारी–चेतना का अर्थ हुआ नारी में निहित जागरूक शक्ति। नारीसमाज तथा परिवार का एक अभिन्न अंग है। जब तक नारी अपने अधिकारों तथाकर्त्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगी तब तक न परिवार ठीक से चल सकता है औरन ही समाज। प्राचीन काल से आज तक नारी में चेतना का निरन्तर विकास होतारहा है। वह निरन्तर विकास की सीढ़ियों पर चढ़ती रही है। नारी की प्रशंसा मेंशिवजी बतलाते हैं कि–'नारी के समान न योग है, न जप है, न तप है, न तीर्थहै। यही इस संसार की सर्वाधिक पूजनीय देवता है क्योंकि वह पार्वती का रूप है।उसके समान न कुछ था, न ही कुछ होगा।

प्रारम्भ में नारी केवल एक विलास की सामग्री थी। नारी के विभिन्नरूप माँ, बहन, पुत्री आदि अधिक विकसित न हो सके थे। नारी का क्षेत्र बहुतसंकुचित था। स्त्रियों को घर की चार–दीवारी के अन्दर ही रहना होता था। उन्हेंपढ़ने–लिखने, नौकरी आदि की किसी भी प्रकार की आजादी नहीं थी। नारियाँएक प्रकार की घुटन भरी ज़िन्दगी व्यतीत कर रही थी।

Copyright @ 2024 Author

ये नारी–चेतना का ही विकास है कि नारी वर्तमान में कन्धे से कंधामिलाकर पुरुषों के साथ कार्य कर रही है। नारी के मन में पुरुष की दासता सेमुक्त होने की ललक पैदा होती है। नारी अब शिक्षित भी हो चुकी है। कर्मभूमिउपन्यास की 'सुखदा' पुलिस के सामने खड़ी होकर कहती है–'क्यों भाग रहे हो?यह भागने का समय नहीं। छाती खोलकर खड़े होने का समय है। दिखा दो कितुम धर्म के नाम पर किस तरह प्राणों का होम करते हो। भागने वालों की कभीविजय नहीं होती। इस समय स्त्रियाँ जागरूक हो चुकी है। वो पुरुषों में शक्तिका संचार है। एक बार एक फ्रेंच लेखक ने भी लिखा था कि अगर किसी देश कीअवस्था का पता लगाना हो, तो वहाँ की स्त्रियों की दशा जानना जरूरी है।इसका तात्पर्य है कि जो समाज जितना अधिक उन्नतिशील होगा, वहाँ स्त्रियाँ कीदशा उतनी ही विकसित होगी।

पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से भारतीय नारी ने नई रोशनी, नई सभ्यताके प्रसार में देखा कि वह पति की दासी नहीं हैं। समाज में नारी को भी पुरुष केसमान अधिकार है। बाल–विवाह, अनमेल–विवाह, विधवा–विवाह और वेश्यावृत्तिके विरुद्ध आन्दोलन चरम पर था। प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने लिखा है–'स्त्री–पुरुषएक होकर रहे, दोनों में मतभेद न होने पावे। स्त्री को गर्व न हो कि मैं स्वामी सेबड़ी हूँ और न स्वामी को अभिमान हो कि ईश्वर ने सब बुद्धि मेरे ही हिस्से में रखीहै। स्त्री घर की मालकिन है और पुरुष बाहर का, लेकिन दोनों में मतैक्य हो दोनोंइस पवित्र प्रेम सूत्र में बंधे हों, जहाँ न राज है न अभिमान, न द्वेष है और नकलह। भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं समाज में नारी को बहुत गौरवपूर्ण स्थानप्राप्त है। दर्शन नारी को प्रकृति रूपा मानता है। वह सृष्टि के मूल में है। पुरुष केरागात्मक जीवन में नारी सदैव उच्च स्थान की अधिष्ठात्री रही है। वह परिवार कीसंचालिका है। वैदिक साहित्य में नारी के पत्नी रूप को सर्वोच्च स्थान दिया गयाहै। वहाँ प्रत्येक गृहस्थ द्वारा कन्या की कामना की गई है। पुत्र और पुत्री में कोईभेद नहीं माना गया। पुराणकाल में कन्या को देवी रूपा स्वीकार किया गया हैजबकि श्रीमद्भागवत में नारी के कन्या रूप को गुणगान है।

इस प्रकार नारी–चेतना की परम्परा वेदों–पुराणों से चली आ रही है।अंग्रेजी प्रशासन ने शिक्षा में सुधार लाकर नारी को जागृत किया और नारी नेस्वाधीनता आन्दोलन में पुरुष के समान प्रयत्न किए। स्वतन्त्रता के बाद भारतीयनारी ने अधिकाधिक प्रगति की ओर कदम बढ़ाए और देश के उच्चतम प्रशासकीयपदों पर काम किया व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी अपने व्यक्तित्व का प्रभाव सिद्धकिया। स्त्री जागृति हुई उसे पुरुष के समान अधिकार मिले। आज की नारीपरम्परा की लीक पाटने की अपेक्षा नई चुनौतियों भरी राहों पर चलने का खतराउठाने को तत्पर है। परिणामस्वरूप नारी के विकास की गति बढ़ी उसमें अधिकारबोध विकसित हुआ।

भीष्म साहनी जी उच्च व्यक्तित्व एवं उच्च आदर्शों के धनी थे। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व को उसके कृतित्व से अलग करने नहीं देखा जा सकता। साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाया उसकी रचनाओं में देखी जा सकती है। 8 अगस्त 1915 को जन्मे साहनी जी का बचपन माँ की धर्मभीरू ममता और कर्त्तव्यपरायणता, पिता के आर्यसमाजी उपदेशों में बीता। साहनी जी की प्रारम्भिक शिक्षा घर में हुई। साहनी जी को खेल–कूद का शौक था, वे हॉकी बड़ी अच्छी खेलते थे। इनको चित्रकला, मूर्तिकला का भी शौक था।

भीष्म साहनी जी को साहित्य लिखने की प्रेरणा स्कूल समय में ही मिलनी प्रारम्भ हुई। इनके परिवार में भी साहित्यिक माहौल पहले से चला आ रहा था। फुफेरी बहन सत्यवती मलिक जानी–मानी कहानीकार थी और उनके जीजा जी चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ख्याति प्राप्त लेखक थे। स्वतन्त्रता के बाद के साहित्यकारों में भीष्म साहनी जी का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। इतने लम्बे समय से बिना किसी शोर–शराबे के साहित्य से सक्रिय रूप में जुड़े रहे। स्वतन्त्रता के बाद साहित्य का अध्ययन आन्दोलनों के माध्यम से हुआ, परन्तु भीष्म साहनी की विविधतापूर्ण रचनाओं को किसी आन्दोलन की सीमाओं में नहीं बाँध जा सकता। साहनी जी ने आठ कहानी–संग्रह, छह उपन्यास, चार नाटक और एक जीवनी के साथ–साथ एक निबन्ध–संग्रह भी लिखा है। प्रस्तुत शोध में भीष्म साहनी के उपन्यासों में नारी चेतना का अध्ययन किया गया है।

शोध अध्ययन का महत्व :

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज के अंतः संघर्ष वउतार–चढ़ावों को एक रचनाकार अपनी कृति के माध्यम से चित्रित करता है। नारीआरंभ से ही साहित्य रचनाओं की केन्द्र बिन्दु रही है। साहित्य का नारी–जीवनसे चिरन्तन एवं घनिष्ठ संबंध है। साहित्य के द्वारा नारी जीवन के विविध रूपों,घटनाओं, समस्याओं, भावनाओं विचारों व मानदंडों को अभिव्यक्ति मिलती है।साहित्य मानव जीवन सापेक्ष होता है और नारी–जीवन साहित्य से प्रेरित

 Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

एवंपरिचालित होता रहता है। गतिशील व विकासशील नारी जीवन में मानव केदृष्टिकोणों, धारणाओं, विचारों और आदर्शों में अथवा उसके जीवन में समय केसाथ–साथ परिवर्तन आना अनिवार्य है। नारी–चेतना आधुनिक काल में एक चर्चितविषय रहा है। इस विषय को लेकर अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाकरनारी समाज में एक नई चेतना फूंकने का कार्य किया है। परन्तु नारी चेतना सेसंबंधित कथा साहित्य पर शोध कार्य का अभाव रहा। इसी अभाव को दूर करनेके उद्देश्य से तथा नारी चेतना के विभिन्न पहलुओं को समाज के सामने लाने केउद्देश्य से मैंने इस विषय का चयन किया है। यद्यपि हिन्दी साहित्य में नारी चित्रणया नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आदि विषयों पर शोध प्रबन्ध इसी तरहके हैं परन्तु इनमें नारी चेतना विशेषकर भीष्म साहनी के साहित्य में नारी चेतनासे संबंधित कोई शोध प्रबन्ध नहीं हुआ।

आज समाज में शिक्षा के इतने प्रचार–प्रसार के बाद भी नारी शोषणएवं उत्पीड़न कम नहीं हो पा रहा है। ऐसे में इस विषय का महत्त्व और भी बढ़जाता है। समाज में नारी चेतना की भावना जितनी तीव्र होगी उतना ही नारी काविकास अधिक होगा। आज नारी जिस उत्साह से नारी शोषण एवं उत्पीड़न कीसमाप्ति के लिए संघर्षरत है या इस प्रतियोगिता के युग में आगे बढ़ने के लिएप्रयासरत है। ऐसे में प्रस्तुत विषय नारी जगत में एक नई चेतना का संचार करसकता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय मौलिक है जिस पर अब तक किसी शोधार्थीका ध्यान नहीं गया है।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तावितशोध के उद्देश्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा प्रकट किया जा सकता है–

1. वर्तमान में नारी चेतना व नारी विकास की जानकारी देना।
2. महिलाओं में नव चेतना का विकास करना।
3. पाठकों को भीष्म साहनी के साहित्य की उपलब्धियों की जानकारी देना।
4. नारी जगत में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना।

शोध की विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति साहित्यिक है इसलिए इस शोध अध्ययन में 'विश्लेषणात्मक विधि' तथा 'गवेषणात्मक विधि' को शामिल किया गया है। इन विधियों की सहायता से भीष्म साहनी जी के उपन्यासों में नारी चेतना को समझने का प्रयास किया गया है। 'विश्लेषणात्मक विधि' के द्वारा भीष्म साहनी की गद्य एवं पद्य रचनाओं का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। 'गवेषणात्मक विधि' के द्वारा नारी चेतना एवं जन जागरण के क्षेत्र में हुए शोध अध्ययन का पता लगाया गया है।

उपसंहार :

साहित्य को जीवन का प्रतिबिम्ब इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उसमें जीवन के विविध रूपों का यथातथ्य अंकन हुआ करता है जब नारी के संदर्भ में साहित्य के माध्यम से कोई बात कही जाए तो वह साहित्य जीवन के सम्पूर्ण दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर देता है। वैदिक काल से लेकर अधतन नारी को विविध रूपों में जहाँ पूजनीय माना गया, वही उत्तर वैदिक काल में यही नारी सम्मान की दृष्टि से हेय मानी जाने लगी। पौराणिक काल में नारी के साहस और शौर्य की खुलकर प्रशंसा होने लगी और तत्कालीन काल में वह अपने खोए सम्मान को पुनः प्राप्त करने में सफल रही। रामायण काल में भी नारी सम्मान से अछूती नहीं रही। किन्तु महाभारत काल में यही चौसर पर बिछाई जाने लगी और इसे एक वस्तु मानकर दांव पर लगाया जाने लगा अर्थात् नारी एक बार फिर निरादर का पर्याय बन गई। आदिकाल तक आते–आते नारी की स्थिति और अधिक शोचनीय हो गई और हिन्दी साहित्य के रीतिकाल तक यही नारी काम–संतुष्टि का पर्याय बनी रही। आधुनिक काल के उत्तर आधुनिक युग में नारी की स्थिति काफी सुधर चुकी है, कुछेक अपवादों को छोड़कर देखें तो नारी की स्थिति और संघर्ष को हर साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना चाहता है।

भारतीय समाज में नारी के विविध रूप हैं। समाज में शायद ही ऐसा कोई प्राणी होगा जो नारी के किसी न किसी रूप से प्रभावित न हो। नारी का माँ,पत्नी, प्रेमिका, बेटी, बहन, बहू आदि के रूप में प्रमुख चित्रण किया है। वस्तुतःनारी अपने इन सारे रूपों के अस्तित्व के लिए संघर्ष करती नजर आती है। वह माँ

Copyright @ 2024 Author

के रूप में यदि प्रताड़ित है तो पत्नी के रूप में भी उसकी स्थिति ज्यादा बेहतरनहीं कही जा सकती। उसका प्रेमिका रूप तो परिव्यक्ता नारी से भी बदत्तर है।वह बेटी के रूप में एक बोझ के अतिरिक्त कुछ और नहीं। बहू के रूप में नारी कीइससे खराब स्थिति क्या होगी कि एक सास अपनी बहू को सारी जिन्दगी बेटीनहीं मान पाती। नारी का वेश्या रूप तो संघर्ष की साक्षात् प्रतिमा है, क्योंकि नकेवल उसे दैहिक बल्कि सामाजिक और मानसिक स्तर पर भी हरपल संघर्ष करनापड़ता है। साहनी जी ने अपनी कहानियों की तरह उपन्यासों में भी नारी के संघर्षको विविध रूपों के माध्यम से चित्रित किया है। उनके उपन्यासों और कहानियोंमें नारी की स्थिति लगभग वैसी ही चित्रित हुई है, जैसी आजकल समाज में है।वस्तुतः नारी के संघर्ष का साहनी जी ने यथार्थ चित्रण किया है।

भीष्म साहनी जी ने सामाजिक व्यवस्था के विविध पक्षों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं दाम्पत्यसम्बन्धों, पूंजीवादी व्यवस्था में विकसित होते नए मूल्यों, नारी की स्वतन्त्रता,मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलुओं को साहित्यिक रचनाओं की विषयवस्तुबनाया है। भीष्म साहनी जी के साहित्य में नारी की स्थिति, उसकी स्वतन्त्रता,समाज के प्रति उसकी सहानुभूति एवं क्षमाशीलता, नारी स्थिति में आए बदलावोंको स्थान दिया है। साहनी जी के साहित्य अध्ययन से ज्ञात होता है कि नारीसमाज का अभिन्न अंग है। समाज में रहती हुई नारी कभी तो स्वयं की इच्छाओंको दबा लेती है, तो कभी अपने हक के लिए आवाज उठाती है। जब भी नारी नेअपने अधिकारों को लेकर आवाज उठाई तो उसे दबाने के लिए समाज के लोगआगे आते हैं। परन्तु नारी–शिक्षा से समाज में नई क्रान्ति आई है। जिसका वर्णनबुद्धिजीवी वर्ग एवं नारी में किया गया है।

भीष्म साहनी जी ने नारी जीवन की हर समस्या को अपने साहित्य में उजागर किया है। अविवाहित नारी अपने माता–पिता की खुशी के लिए अपनाजीवन व्यतीत करती है, जबकि विवाहित होने पर वह अपने पति और सास–ससुरकी खुशी को ही अपनी खुशी मानती है। नारी जीवन की सबसे बड़ी समस्या है

कि वह स्वतन्त्र नहीं रह सकती। नारी की स्वतन्त्रता हर समय दावं पर लगी रहतीहै। विवाह से पहले माता–पिता के अधीन, जबकि विवाह के उपरान्त पति,सास–ससुर के अधीन जीवन व्यतीत करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में पदार्पणहोने पर भी नारी खुश नहीं रहती। उसके सामने अनमेल विवाह, बांझपन आदिसमस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। जिसके कारण नारी का सम्पूर्ण जीवन दुःखों का घरबन जाता है। आभूषण की समस्या, ईर्ष्या की समस्या भी नारी जीवन की ऐसीसमस्याएँ है जिनको लेकर नारी स्वयं ही चिन्तित, दुःखी रहती है।

इस प्रकार भीष्म साहनी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने साहित्य में नारी जीवन के हर पहलू को उजागर किया है। अपने अमर साहित्यके कारण साहनी जी युगों–युगों तक स्मरण किए जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :

- शर्मा, पृथ्वीराज (2004) भीष्म साहनी : व्यक्तिव और कथा रचना, आशा प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 64
- कुमार, राधा (2005) स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800–1990), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 118
- गबा, ओम प्रकाश (2009) समाज विज्ञान कोश, बी.आर. पब्लिशिंग दिल्ली पृ.सं. 122
- डॉ. राणा, मीनू (2010) आधुनिक नारी दशा और दिशाएं सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 74
- गोयंदका, जयदयाल (2010) स्त्रियों के लिए कर्त्तव्य शिक्षा, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश पृ.सं. 22
- वर्मा, जगदीश चन्द्र (2015) मानक हिन्दी कोश, नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.सं. 154,155
- डॉ. पाल, रमा (2015) हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, शारदा प्रकाशन, भोपाल, म.प्र. पृ.सं. 34–36
- डॉ. तिवारी, शिवम (2017) : हिन्दी काव्य में नारी, रघु प्रकाषन, नई दिल्ली पृ.सं. 24–28
- डॉ. मिश्रा, एस.एम. (2018) आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी विद्या प्रकाशन, रोहिणी, नई दिल्ली, पृ.सं. 25–29

 Copyright @ 2024 Author